



यूनानी चिकित्सा पद्धति

डॉ. मो. हशमत ईमाम¹, डॉ. मोहम्मद इश्तियाक आलम²

¹ वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता (यूनानी), क्षेत्रीय यूनानी अनुसंधान चिकित्सा संस्थान, गुजरी बाज़ार, पटना सिटी, पटना, बिहार, भारत।

² प्रभारी अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय यूनानी अनुसंधान चिकित्सा संस्थान, गुजरी बाज़ार, पटना सिटी, पटना, बिहार, भारत।

सारांश

460 - 377 ईसा पूर्व में यूनानी चिकित्सा विधि का पता चलता है। यूनानी चिकित्सा पद्धति विश्व की सबसे पुरानी उपचार पद्धतियों में से एक है जिसकी शुरुआत ग्रीस (यूनान) से हुई। भारत में यूनानी पद्धति अरब से आई और जल्द ही भारत में रच-बस गई। इसे भारत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय हकीम अजमल खान को जाता है। यूनानी पद्धति मुख्यतः ह्यूमरल थ्योरी- दम (रक्त), बलगम (कफ), सफरा (पीला पित्त) और सौदा (काला पित्त) पर आधारित है। यूनानी सिद्धांत और अवधारणाओं के अनुसार मानव शरीर सात प्राकृतिक और बुनियादी तत्वों से निर्मित है जो कि उमुर-ए-ताबेयह कहा जाता है, अच्छे स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए ये ही जिम्मेदार हैं। यूनानी चिकित्सा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और रोगों की रोकथाम करने हेतु औषधि उपचार, आहार उपचार, शल्यक्रिया और रेजिमेंटल के माध्यम से उपचार में विश्वास करती है।

मुख्य शब्द : यूनानी चिकित्सा, ग्रीस, ह्यूमरल थ्योरी, उमुर-ए-ताबेयह, उपचार।

प्रस्तावना

यूनानी चिकित्सा पद्धति विश्व की सबसे पुरानी उपचार पद्धतियों में से एक है, जिसकी शुरुआत आज से 2500 वर्ष पहले ग्रीस (यूनान) से हुई। इसीलिए इसे यूनानी पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति के जनक ग्रीस के महान फिलॉसफर व फिजीशियन बुकरात (460-370 BC) जिसे हिपोक्रेट्स के नाम से भी जाना जाता है। बुकरात को बाबा-ए-तिब (Father of medicine) यानी चिकित्सा के पूर्वज भी माना जाता है। भारत में यूनानी पद्धति अरब से आई और जल्द ही भारत में रच-बस गई। इसे भारत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय हकीम अजमल खान को जाता है। कई तरह के जटिल व असाध्य रोगों का यूनानी में इलाज संभव है। मुख्य रूप से गठिया, सफेद दाग, एग्जिमा, आस्थमा, माइग्रेन, मलेरिया, बांझपन, फालिज, लकवा, एंव फाइलेरिया इत्यादि। यूनानी चिकित्सा पद्धति में औषधियाँ जड़ी-बूटियों, खनिज पदार्थों एवं जंतुओं से प्राप्त किया जाता है। बीमारियों की जांच नब्ज टटोलकर मल मुत्र देखकर की जाती है। यूनानी विद्वानों का मानना है कि साफ-सुथरे हवा में श्वास लेना, स्वच्छ पानी, ताजे भोजन का सेवन करना मनुष्य को बीमारी से दूर रखता है। इसी तरह मन और शरीर के बीच संतुलन बनाए रखा जाना चाहिए ताकि चयापचय प्रक्रिया आसानी से काम कर सके। यूनानी चिकित्सा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, और रोगों की रोकथाम करने हेतु औषधि उपचार, आहार उपचार, शल्यक्रिया और रेजिमेंटल के माध्यम से इलाज में विश्वास करती है।

यूनानी चिकित्सा के सिद्धांत और अवधारणाएं

यूनानी पद्धति मुख्यतः ह्यूमरल थ्योरी- दम (ब्लड), बलगम (कफ), सफरा (पीला पित्त) और सौदा (काला पित्त) पर आधारित है। यूनानी सिद्धांत और अवधारणाओं के अनुसार मानव शरीर सात प्राकृतिक और बुनियादी तत्वों से निर्मित है जो कि उमुर-ए-ताबेयह कहा जाता है, अच्छे स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए ये ही जिम्मेदार हैं। ये हैं अर्कान (एलीमेंट्स), मिजाज (स्वभाव), अखलात (देहद्रव) आज्ञा (अंग), अर्वा (रूह), कुवा (ताकत) अफआल (कार्य): शरीर के सुचारू रूप से कार्य करने हेतु उपरोक्त सभी घटकों का उपस्थित होना अनिवार्य है, इन बुनियादी घटकों में से किसी एक की अनुपस्थिति में शारीरिक स्थिति में बदलाव आसकता है जिस कारण मनुष्य बीमार हो सकता है, या यहां तक कि मौत भी हो सकती है। यूनानी प्रणाली की

बुनियादी सिद्धांत हिपोक्रेट्स की प्रसिद्ध चार देहद्रवों के सिद्धांत पर आधारित है जिसे ह्यूमरल थ्योरी कहते हैं। यह शरीर में चार देहद्रवों अर्थात् दम (ब्लड), बुलगम (कफ), सफरा (पीला पित्त) और सौदा (काला पित्त) उपस्थिति को मान कर चलता है।

अर्कान (एलीमेंट्स) को अनासिर भी कहते हैं यह मनुष्य के शरीर के लिए बेसिक यूनिट माना जाता है यूँ तो इसकी संख्या अनगिनत है मगर अरस्तु (Aristotle) ने मुख्यतः चार ही माना है हवा, जल, मिट्टी एवं आग इसी पे हिपोक्रेट्स (460-370 बीसी) ने यूनानी पद्धति की बुनियाद रखी, इसी को यूनानी प्रणाली का पहला मौलिक सिद्धांत माना जाता है। इस सिद्धांत का सार ये है कि व्यक्ति का शरीर चार मूल तत्वों से बना है जो सामूहिक रूप से अनासिर-ए-अर्बा (चार तत्व) कहलाता है। शरीर अपना पोषण महत्वपूर्ण तरल पदार्थ अखलात-ए-अरबा (चार देहद्रव) के माध्यम से प्राप्त करता है ये तरल पदार्थ वास्तव में वे हैं जो मानव शरीर में भोजन से बनते हैं जिसमें विभिन्न हॉर्मोन और एंजाइम भी शामिल हैं। शरीर के सभी स्राव / द्रवों को उनके रंग पर नामित किया जाता है जैसे लाल रंग के स्राव/ द्रवों को दम (रक्त), श्वेत रंग के द्रवों को बलगम, पीले रंग के द्रवों को सफरा और काले रंग के द्रवों को सौदा कहा जाता है। इन चारों द्रवों का अपना अपना मिजाज (स्वभाव) होता है, जैसे दम का मिजाज हार रतब (hot and wet) बलगम का बारिद रतब (cold and wet) सफरा का हार याबिस (hot and dry) और सौदा का बारिद याबिस (cold and dry) है। वैसे शरीर का हर एक तत्वों का भी अपना अपना मिजाज होता है इन तत्वों के परस्पर व्यवहार का नतीजा मिजाज (स्वभाव) कहलाता है, ये सभी तरल पदार्थ नमी के बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं शरीर के विभिन्न अंग को पोषण भी प्रदान करते हैं। इनसे खून गर्म रहता है ये जिगर में पैदा होता है। इस प्रणाली के अनुसार जब भी देहद्रव के संतुलन में कोई गड़बड़ी होती है तो यह रोग का कारण बनता है।

आज्ञा (अंग) मानव शरीर के विभिन्न अंगों को कहा जाता है प्रत्येक निजी अंग का स्वास्थ्य या रोग पूरे शरीर की स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। हर अंग का अपना अपना मिजाज होता है और सारे अंगों को रूह (आत्मा) और अखलात के द्वारा भोजन से उर्जा प्राप्त होती है। रूह (आत्मा) एक गैसीय वस्तु है यह शरीर की सभी चयापचय गतिविधियों में मदद करती है। यह अखलात-ए-अर्बा (चार देहद्रव) के

साथ ही प्रवाहित होता है, यह शरीर के सभी अंगों के लिए जीवन शक्ति का स्रोत है। यह घटक शरीर के सभी अंगों को गति और काम करने के लिए प्रेरित करता है। एक स्वस्थ शरीर के विभिन्न अंग न केवल उचित आकार में होते हैं, बल्कि उनके संबंधित कार्य भी उचित तरीके से चलते रहते हैं। शरीर को कार्य करने योग्य कुवा (ताकत) बनाता है कोई भी शरीर या अंग तभी काम कर पाता है जब उनमें कुवा उपस्थित हो ये कुवा मुख्यरूप से चार प्रकार के होते हैं।

1. कुव-ए-तबियाह या कुदरती ताकत (Physical faculty): चयापचय और प्रजनन की ताकत है जिगर इस ताकत का केंद्र है।
2. कुव-ए-नफ्रसानियाह या मानसिक ताकत (Vital faculty): यह तंत्रिका और मानसिक ताकत है इसका का केंद्र मस्तिष्क है।
3. कुव-ए-हयवानियाह या जीवन शक्ति (Nervous faculty): जीवन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है इस ताकत का केंद्र दिल है।
4. कुव-ए-तनासुलिया (sexual faculty): यह मुख्य रूप से प्रजनन की ताकत है वृषण और अंडाशय इस ताकत का केंद्र है।

उपचार एवं उपचार के नियम व विधियाँ

यूनानी चिकित्सा पद्धति में उपचार के कई नियम और विधियाँ हैं जो निम्न हैं।

1. इलाज बील दावा (Pharmacotherapy)
2. इलाज बिल गिजा (Dietotherapy)
3. इलाज बिल तद्वीर (Regimental Therapy)
4. इलाज बील यद (Surgery)

इलाज बील दवा (Pharmacotherapy): यूनानी चिकित्सा पद्धति में औषधि के मुख्य तीन स्रोत हैं पहली जड़ी बूटियाँ दूसरी खनिज व लवण पदार्थ तीसरी जीव जन्तु अर्थात् केवल प्राकृतिक स्रोत से उपलब्ध दवाओं का ही इस्तेमाल यूनानी चिकित्सा में किया जाता है। जैसे कि मनुष्य और उनकी अंगों का अपना अपना मिजाज होता है उसी तरह औषधि का भी अलग अलग मिजाज होता है जिसे चार वर्गों में विभाजित किया गया है चिकित्सक अपनी शक्ति रोगी की उम्र और मिजाज, रोगों की प्रकृति और गंभीरता को ध्यान में रखकर औषधि को prescribe करते हैं। यूनानी दवाओं को सूफूफ, माजून, काढ़ा, अर्क, जवारिश, खमीरा, शर्बत, हब्ब, कुर्स आदि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

इलाज बील गिजा (आहार चिकित्सा): यूनानी उपचार में भोजन का बड़ा महत्व है। इसका उपयोग स्वास्थ्य को बनाए रखने एवं उपचार के लिए प्राचीन काल से ही किया जा रहा है भोजन की गुणवत्ता और मात्रा को विनियमित करने से कई बीमारियों का सफलतापूर्वक इलाज होता है।

इलाज बिल तद्वीर: यह कई तरह की प्रक्रियाओं का समूह है जिसका मुख्य उद्देश्य शरीर में छिपा हुआ जहरीला और हानिकारक पदार्थ का शरीर से बाहर निकालना है जिस से शरीर को जीवित और रोग मुक्त रखा जासके इसके कई प्रकार हैं जैसे इसहाल (Purgation), इदरार (Diuresis), इरसाले अलक (लीचिंग), फस्द (वेनेसेक्शन), हिजामत (कर्पींग), दलक (मालिश), रियाजत (व्यायाम), हम्माम (स्नान), तारीक (डाइफोरिसिस), अमले कई (Cauterization), नुतूल (Irrigation), इनकेबाब (इन्हेलेशन), तनाफिस (एक्सपेक्टोरेशन), टकमीड (फोर्मेंटेशन), इमाला (Diversion of morbid material), इलाम (Counter Irritation), आबज़न (हाइड्रेशन थेरेपी), जिमाद व तिला (ऑटोमेंट एंड लिनिमेंट) इत्यादि। ये regimes वास्तव में अख्लात ए रद्विया (bad humour) का शरीर से बाहर निकालना है। जैसे ही इन अख्लात ए रद्विया (bad humour) को शरीर से हटा दिया जाता है, सामान्य स्वास्थ्य बहाल हो जाता है।

इलाज-बिल-यद (सर्जरी / शल्यक्रिया): इसकी यूनानी चिकित्सा पद्धति में बहुत सीमित उपयोग है, हालांकि यूनानी प्रणाली को इस क्षेत्र में अग्रणी होने और अपनी स्वयं के उपकरणों और तकनीकों को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है। अबुल कासिम अल ज़हरावी (936- 1036 AD) की पुस्तक “किताब अल-तसरिफ” में बहुत विस्तार से वर्णन मिलता है। वर्तमान में इस प्रणाली के लिए बहुत ध्यान दिया जा रहा है इसी वजह से इस विषय में स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

रोग की रोकथाम (Prevention of Disease)

यूनानी चिकित्सा तबियत की अवधारणा का वर्णन करती है, जो शरीर के भीतर एक स्वस्थ वातावरण बनाने और रोग के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करने का एक सर्वोच्च योजनाकार है। अगर तबियत मजबूत है तो एक आदमी आसानी से किसी रोग से ग्रस्त नहीं होता है अगर यह कमजोर हो जाती है तो मनुष्य को रोग का खतरा बना रहता है। तबियत मानव के संरचनात्मक कार्यात्मक और मनोवैज्ञानिक चरित्र की कुल राशि के योग के रूप में परिभाषित किया गया है। हिप्पोक्रेट्स के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति में एक विशेष क्षमता छिपी हुई होती है जिसे शरीर का रक्षात्मक तंत्र कहा जाता है या यूनानी पैथी की भाषा में, तबियत मुदाब्बिर ए बदन है। रोगों के लिए तबियत ही वास्तविक चिकित्सक है, चिकित्सक का काम तो बस दवा देकर तबियत की मदद करना है। शरीर के चार देहद्रव्य में संतुलन बनाए रखना भी तबियत का ही काम है।

यूनानी चिकित्सा पद्धति में न सिर्फ रोग का इलाज किया जाता है बल्कि रोगों से बचने के लिए शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ाई जाये ये भी बताया गया है। यूनानी चिकित्सक का यह मानना है कि मनुष्य का स्वास्थ्य आसपास के वातावरण से भी प्रभावित होता है यही कारण है की मानवजाति और उसके वातावरण में संतुलन बनाना जरूरी है। यूनानी चिकित्सा में कुछ ऐसे कारक का वर्णन किया गया है जो स्वास्थ्य के लिए जरूरी है जो की कुल सात हैं जिसे की असबाब-ए-सिता जरूरिया (Six Essential Factors for Life) कहते हैं। इन्ही सात कारक की वजह से या तो मनुष्य स्वस्थ रहता है या रोग से ग्रसित रहता है। वो 07 कारक निम्न हैं (Six Essential Factors for Life):

1. हवा (Fresh Air)
2. खाद्य और पेय पदार्थ (Food and Drink)
3. शारीरिक हरकत और आराम करना (Body Movement and Repose)
4. मानसिक हरकत और आराम करना (Mental Movement and Repose)
5. सोना और जागे रहना (Sleep and Wakefulness)
6. निकासी और प्रतिधारण (Retention and Evacuation)

मुन्जिज़ व मुसहिल (Concoctive and Purgative)

मुन्जिज़ व मुसहिल थेरपी सभी चिरकारी (क्रॉनिक) रोगों के उपचार के मौलिक सिद्धांत है। शरीर में विषैले पदार्थ या किसी भी ऐसे पदार्थ जिसकी वजह से रोग होता है वे शरीर से आसानी से नहीं निकलते पहले उसे निकलने योग्य बनाया जाता है इस कार्य के लिए जो औषधि दी जाती है उसे मुन्जिजात कहते हैं फिर उसे कुछ खास औषधि देकर शरीर के प्राकृतिक मार्ग से बाहर निकाल दिया जाता है, जिन औषधि का प्रयोग इस कार्य के लिए किया जाता है उसे मुसहिलात कहते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

एलोपैथिक चिकित्सा के दुष्प्रभाव से आज के आधुनिक युग में मनुष्य का जीवन बहुत ही जटिल एवं समस्यापूर्ण हुआ है इसी कारण अब लोग हर्बल चिकित्सा की तरफ लौटने लगे हैं। यूनानी चिकित्सा मानवजाति को स्वस्थ और रोगमुक्त बनाने के लिए प्राचीन काल से ही प्रयासरत है जिससे कोई व्यक्ति न्यूनतम या शून्य बीमारी के साथ एक स्वस्थ जीवन जी सके, यह पूरी तरह से समग्र दृष्टिकोण (Holistic

Approach) पर आधारित है।

संदर्भ

1. मोहम्मद नासीरुद्दीन, मोहम्मद जुल्किफ्ल, यास्मीन खान, The concept of Nuzj (concoction) in Unani system of Medicine, हिप्पोक्रेटिक जर्नल ऑफ यूनानी मेडिसिन, वॉल्यूम 10 संख्या 02, अप्रैल-जून 2015.29-32।
2. नफीस बिन औज किरमानी, शरह असबाब, उर्दू अनुवाद हाकिम मुहम्मद कबीरुद्दीन, खंड I, 2007, एजाज पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 106।
3. रब्बन तबरी, फिरदौस अल हिक्मत, इदारा किताब अस शिफा, उर्दू अनुवाद हाकिम मोहम्मद अब्दुल शाह संभली, 2010।
4. इब्न सिना, अलकानून फित तिब, भाग 1, अनुवाद गुलाम हसनैन कन्तुरी। एजाज पब्लिशिंग हाउस 2010, नई दिल्ली, पृष्ठ 106, 203-5, 1223।
5. हाकिम सैयद कमालुद्दीन हुसैन हमदानी, उसूल ए तिब, नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज, नई दिल्ली, 2006: पृष्ठ 443-458।
6. आजाद हुसैन लोन, तंजील अहमद, मोहम्मद अनवर, हाशमत ईमाम, शाहिदा हबीब. Perception of health promotion in Unani herbal medicine. जर्नल ऑफ हर्बल मेडिसिन, vol 2, 2012, पृष्ठ 1 - 5।
7. अली इब्न अब्बास मजूसी, कामिलुस सना, उर्दू अनुवाद गुलाम हसनैन कन्तुरी, मुंशी नवल किशोर प्रकाशित, लखनऊ, 1889।
8. इब्न रूश्द, किताबुल कुल्लियात, उर्दू अनुवाद by CCRUM, नई दिल्ली, 1987।